© 2017 IJSRST | Volume 3 | Issue 7 | Print ISSN: 2395-6011 | Online ISSN: 2395-602X
Themed Section: Science and Technology

किरातार्जुनीय में वर्णित वस्तु वर्णन

डॉ0 निलेश कुमार
ग्राम-बरैनी, पोस्ट-कछवां, जनपद मिर्ज़ापुर, उत्तरप्रदेश

लौकिक संस्कृत साहित्य में महाकाव्य परम्परा का श्री गणेश रामायण से होता है। संस्कृत के महाकाव्य रस प्रधान है किन्तु वस्तु वर्णनों की भी उनमें बहुलता रहती है। संस्कृत कवियों की यह विशेषता रही है कि वे साधारण से साधारण वस्तु को अपनी कल्पना, सहृदयता, सूक्ष्मदर्शिता, तथा वर्णन चातुरी से इस प्रकार प्रस्तुत करते है कि पाठक या श्रोता के सम्मुख उस वस्तु का समग्र एवं चित्ताकर्षक रूप उपस्थित हो जाता है। भामह ने महाकाव्य में मन्त्रणा, दूतसम्प्रेषण, अभियान, युद्ध तथा नायक के अभ्युदय का वर्णन आवश्यक माना है–

मन्त्रप्रयाणजिनायकाभ्युदयैश्च यत्।
पंचभिःसन्धिभिर्युक्तं नातिव्याख्येयमृद्धिमत्।। 1

दण्डी के सम्मति में कथावस्तु को अति संक्षिप्त नही होना चाहिये।उनके अनुसार नगर पर्वत समुद्र, ऋतु, चन्द्रोदय, और सूर्योदय, ये कथावस्तु को विशद बनाने में सहायक होते है। विवाह, उद्यान क्रीडा, पान–गोष्ठी, सुरत विलास, विप्रलम्भ वेदना तथा पुत्र जन्म जैसी प्रासंगिक कथाओं का भी सन्निवेश होना चाहिए। शत्रु पर विजय प्राप्ति के लिए अमात्यों के साथ युद्ध–मन्त्रणा, दूत सम्प्रेषण, रण–प्रयाण, युद्ध और अन्त में विजय के साथ कथावस्तु में व्याप्त
नायक के अभ्युदय की कथा का वर्णन होना चाहिये

नगरार्णवशैलर्तु चन्द्रार्कोदयवर्णनैः।
उद्यानसलिलक्रीडामधुपानरतोत्सवैः।।
विप्रलम्भैर्विवाहैश्च कुमारोदयवर्णनैः।
मन्त्रदूतप्रयाणजिनायकाभ्युदयैरपि।। 2.

विश्वनाथ के अनुसार महाकाव्य में सूर्य, चन्द्रमा, दिन, रात्रि, प्रदोष, अन्धकार, प्रातःकाल, मध्यान्ह, सन्ध्या, मृगया पर्वत, ऋतु, वन, समुद्र, सम्भोग, विप्रलम्भ, मुनि, स्वर्ग, नगर, यज्ञ, संग्राम, यात्रा, विवाह, मन्त्र, पुत्रादि का यथासम्भव सांगोपांग वर्णन करना चाहिए।

सन्ध्यासूर्येन्दुरजनीप्रदोषध्वान्तवासराः।।
प्रातर्मध्यान्हमृगयाशैलर्तुवनसागराः।
सम्भोगविप्रलम्भौ च मुनिस्वर्गपुराध्वराः।।
रणप्रयाणोपयममन्त्रपुत्रोदयादयः।
वर्णनीया यथायोग्यं सांगोपांगा अमी इह। 3.

किसी भी वस्तु का वर्णन करने के लिए कवि के पास अनेक साधन होते है। कभी वह अभिधावृत्ति के द्वारा वाच्य रूप में किसी भाव को प्रकट करता है और कभी वह वस्तु के अभिप्रेत को समझने के लिए व्यञ्जना वृत्ति का सहारा लेता है। संस्कृत के सभी महाकाव्यों में वस्तु वर्णन प्राप्त होता है। कालिदास के परवर्ती कवियों में वैदुष्य प्रदर्शन की भावना इतनी प्रबल हो चुकी थी कि वे किसी भी वस्तु, स्थान, घटना, का सीधा वर्णन न कर उसमें अपने पाण्डित्य का प्रदर्शन करने का पूर्ण लाभ उठाते थे। इस परम्परा का सूत्रपात्र करने वाले परवर्ती कवियों में महाकवि भारवि प्रथम स्थान रखते है। भारवि ने किरार्ताजुनीय के अल्प कथानक को अपने पाण्डित्य के बल पर विशाल 18 सर्गों में निबद्ध किया। भारवि ने किरातार्जुनीय में अपनी कल्पनाशक्ति,

सहृदयता और वर्णन चातुरी से ऋषि वर्णन, ऋतु वर्णन, पर्वतों, वन विहार, जल क्रीडा, सन्ध्या वर्णन, पानगोष्ठी, दूत सम्प्रेषण आदि विभिन्न वस्तुओं का वर्णन रूचि पूर्ण से किया है।

ऋषि वर्णन– किरातार्जुनीय में ऋषि वर्णन प्रसंग में महर्षि व्यास का संक्षिप्त किन्तु सुन्दर रूप में वर्णन प्राप्त होता है। द्वैतवन में पाण्डवों के सम्मुख समागत महर्षि व्यास अपने सौम्य निरीक्षण से स्वच्छन्द पशु पक्षियों के हृदय में भी शान्ति उत्पन्न कर रहे थे। उनका तेज पुंज अत्यन्त समुज्ज्वल तथापि अवलोकन योग्य तथा दुष्कृतों का नाशक था। वे विपन्निवारक तथा तपश्चर्योत्पादक थें–

मधुरैरवशानि लम्भयन्नपि तिर्यञ्चि शमं निरीक्षितैः।
परितः पटु बिभ्रदेपसां दहनं धाम विलोकनक्षमम्।।
सहसोपगतः सविस्मयं तपसां सूतिरसूतिरापदाम्।
दद्वशे जगतीभुजा मुनिः स वपुष्मानिव पुण्यसञ्चयः।। 4.

महर्षि व्यास की दर्शन सम्पत्ति की महिमा का वर्णन करते हुए युधिष्ठिर कहते है कि आपका यह दर्शन–सम्पत्ति बिना पुण्य संचय किये पुरूषों के लिए दुष्प्राप्य है। यह रजोगुण से रहित और अभिलाषाओं को सफल बनाने में समर्थ है। यह मेघनिर्मुक्त आकाश की वर्षा के सदृश है। आपका संदर्शन श्री की वृद्धि करता है। पापों को निर्मूल करता है, कल्याण की वर्षा करता है और कीर्ति का विस्तार करता है–

अनाप्तपुण्योपचयैर्दरापा फलस्य निर्धूतरजाः सवित्री।
तुल्या भवद्दर्शनसम्पदेषा वृष्टेर्दिवो वीतबलाहकायाः ।। 5.

पर्वत वर्णन–किरातार्जुनीय में हिमालय, कैलाश तथा इन्द्रंकील पर्वत का वर्णन प्राप्त होता है। इन पर्वतों का दृश्य यक्ष के सामने जैसा आया उसी प्रकार वर्णित हुआ है। इसलिए इन पर्वतों के प्रति भावों का आश्रय यक्ष ही लगता है किन्तु यक्ष के अतिरिक्त स्वयं कवि तथा अर्जुन भी आश्रय है। पर्वत वर्णन में उत्प्रेक्षा का सुन्दर प्रयोग हुआ है।हिमालय पर्वत की उच्चता की शोभा का वर्णन उत्प्रेक्षा के सहारे अत्यन्त सुन्दर बन पड़ा है। हिमालय को सर्वरत्न सम्पन्न बताया गया है। इसके शिखर रत्न राशियों से परिपूर्ण है।कन्दरा के प्रदेश लतागृहों से युक्त है। यहॉ के वृक्ष पुष्प तथा फल सम्पत्ति को धारण करते है–

रहितरत्नचयान्न शिलोच्चयानपलताभवना न दरीभूवः।
विपुलिनाम्बुरूहा न सरिद्धधूरकुसुमान्दधतं न महीरूहः।। 6

हिमालय पर अनेक नदियॉ भी है, जिनकी उपमा कवि ने नवविवाहिता रमणी से दिया है। इन सरिताओं में सुर सुन्दरियॉ जल–क्रीडा करती है –

दधति क्षतीः परिणतद्विरदे मुदितालियोषिति मदश्रुतिभिः।
अधिकां सा रोधसि बबन्ध धृति महते रूजन्नपि गुणाय महान्।।7

सब मिलाकर हिमालय की शोभा इतनी रमणीय है तथा वहॉ प्राप्त सुख सुविधायें भी इस प्रकार की है कि दिव्य रमणियॉ हिमालय को स्वर्ग से भी अधिक अच्छा मानती है।

हिमालय में स्थित कैलाश पर्वत का कवि ने बहुत ही रमणीय वर्णन किया है। कैलाश पर्वत पर प्राप्त मरकत मणि की कवि ने भावपूर्ण कल्पना की है–इसके आस–पास की भूमि पर शुक के बच्चों के सदृश मनोरम मरकत मणि की किरणें अभिनव तृणांकुर की सी दिखायी देती है। उन्हे हरिणियॉ घास समझकर खाने के लिए मुख में लेती है और फिर छोड़ देती है। वे किरणें सूर्य की किरणों से संवलित होकर अधिक प्रकाश धारण कर लेती है –

परिसर विषयेषु लीढमुक्ता हरिततृणोद्गमशंकयामृगीभिः।
इह नवशुककोमला मणीनां रविकरसंवलिताः फलन्ति भासः।। 8

किरातार्जुनीय में अर्जुन तथा गान्धर्वों के साथ अप्सराओं के इन्द्रकील प्रस्थान करने का वर्णन प्राप्त होता है। अर्जुन के तप को भंग करने के लिये जब अप्सरायें स्वर्ग से इन्द्रकील पर्वत के लिए प्रस्थान कर रही थी, तो तो उन अप्सराओं की शोभा का कवि ने अत्यन्त सुन्दर वर्णन किया है–वे अप्सरायें स्तनों के भार से झुकी हुयी थी। स्वामी की सम्भावना से पूर्ण तृप्त थी, उनके सौन्दर्य को अविचल कमल की शोभा का अपहरण करने वाले देवेन्द्र के सहस्र नेत्र भी टकटकी बॉधकर देखने में समर्थ न हो सके–

प्रणतिमथ विधाय प्रस्थिताःसद्यनस्ताःस्तनभरनमितांगीरंगनाःप्रीतिभाजः।
अचलनलिनलक्ष्मीहारि नालं बभूवस्तिमितममरभर्तुर्द्रष्टुमक्ष्णां सहस्रम्।। 9

इन्द्रकील के शिखरों पर शब्द करते हुए झरने बह रहे थे। उनकी गम्भीर प्रतिध्वनियों से सवंर्धित रथों की गड़गड़ाहट को मयूरो ने मेघ गर्जन के भ्रम में पड़कर अपनी गर्दन उपर उठाकर बड़ी उत्कण्ठा से सुना–

सध्वानं निपततिनिर्झरासु मन्द्रैः सन्मूर्छन्प्रतिनिनदैरधित्यकासु।
उद्ग्रीवैर्घनरवशंकया मयूरैः सोत्कण्ठं ध्वनिरुपशुश्रुवे रथानाम्।। 10

अप्सराओं के इन्द्रकील प्रस्थान के प्रसंग में हाथियों का भी विस्तार से वर्णन किया गया है।हाथियों की तुलना पर्वतों से की गयी है। गजशास्त्रवेत्ता महावतो ने हाथियों की थकावट दूर करने के लिए उन पर से ध्वजा, झूल, कवच आदि को उतारकर पृथ्वी पर रख दिया। उस समय वे उन पर्वतों की तरह इधर–उधर पड़े रहे, जिनके घने वृक्षों के वन प्रलयकालीन झंझावत से उखाड़कर फेक दिये जाते है और पर्वत भी उठाकर जहॉ कही भी फेंक दिये जाते है–

उत्सृष्टध्वजकुथकङ्कटा धरित्रीमानीता विदितनयैः श्रमं विनेतुम्।
आक्षिप्तद्रुमगहना युगान्तवातैः पर्यस्ता गिरय इव द्विपा विरेजुः।। 11.

वन–विहार वर्णन– किरातार्जुनीय में अप्सराओं एवं गन्धर्वों की उद्यान क्रीड़ा का विस्तार से वर्णन किया गया है। वन विहार में अनुरक्त अप्सराओं की मनःस्थितियों का कवि ने सुन्दर चित्रण किया है। इन्द्रकील की अधित्यका पर वृक्षों में सुन्दर–सुन्दर पुष्प खिले हुए थे। सुरांगनाऍ वृक्षों के सुन्रद पुष्पों पर मोहित हो गयी थी। उनके हॉथों के लिए वे पुष्प सुलभ थे किन्तु वे तो उन पुष्पों का स्वयं चयन न कर परिचर्य्याभिलाषी प्रिय सहचरों के द्वारा चुने हुए पुष्पों को ही ग्रहण करती थी।

स्वगोचरे सत्यपि चित्तहारिणा विलोभ्यमानाः प्रसवेन शाखिनाम्।
नभश्चराणामुपकर्तुमिच्छतां प्रियाणि चक्रुः प्रणयेन योषितः।। 12.

वन विहार के प्रसंग में मानिनी नायिका का अत्यन्त सरस एवं भावपूर्ण चित्रण प्राप्त होता है। किसी गन्धर्व ने किसी अप्सरा को भ्रमवश उसकी सपत्नी के नाम से तार स्वर में सम्बोधित कर पुष्पों का गुच्छा प्रदान किया। इस पर उस मानिनी नायिका ने कुछ नही कहा। वह ऑखें में ऑसू भरकर केवल पैर से भूमि कुरेदने लगी।

प्रयच्छतोच्चैः कसुमानि मानिनी विपक्षगोत्रं दयितेन लम्भिता।
न किञ्चिदूचे चरणेन केवलं लिलेख वाष्पाकुललोचनाभुवम।। 13.

इन्द्रकील पर्वत के शिखरों के वन पथ पर विचरण करती हुयी सुरललनाओं की गति थक जाने से मन्द पड़ गयी थी। उनके श्रान्त क्लान्त अंगों को देखकर गन्धर्वगण इतने मुग्ध हो गये जैसे उन्होने उन्हे प्रथम बार ही देखा हो। अतः उन अंगों को देखने की उत्कट अभिलाषा ने गन्धर्वों पर अपना अधिकार जमा लिया–

विनिर्यतीनां गुरूखेदमन्थरं सुराङ्गनानामनुसानु वर्त्मनः।
सविस्मयं रूपयतो नभश्चरान् विवेश ततपूर्वमिवेक्षणादरः।। 14.

जल–क्रीड़ा वर्णन–किरातार्जुनीय में अप्सराओं और गन्धर्वों की जलकेलि का विस्तृत वर्णन प्राप्त होता है। जलक्रीड़ा के प्रसंग को कवि ने अति सुन्दर ढंग से उपन्यस्त किया है। गंगा की लहरों ने अमर रमणियों के केशों को इधर उधर बिखेर दिया। उनकी पुष्पमालाओं को चंचल कर दिया और उनके अंगराग को मिटा दिया। इस प्रकार उनकी मण्डन सामग्री को नष्ट भ्रष्ट करके वे लहरे अपराधिनी बन गयी। इसी से वे डरकर कॉपती हुयी सी मालूम पड़ने लगी–

विधूतकेशाः परिलोलितस्रजः सुराङ्गनानां प्रविलुप्तचन्दनाः।
अतिप्रसंगाद्विहितागसो मुहुःप्रकम्पमीयुःसभया इवोर्मयः।। 15.

जल विहार से अञ्जन अलक्तक तिलकादि के घुल जाने पर भी उन रमणियों की शोभा दर्शनीय थी। उनकी अंजनविहीन ऑखों को उनके तीर्यगीक्ष्ण ने सुशोभित कर दिया, उनके ओष्ठ पल्लव के अलक्तक घुल गये थे किन्तु कम्प ने उन्हे सुशोभित किया, उनके ललाट का चन्दन प्रक्षालित हो गया था, तो भी ललाट की रेखा ने ललाट की शोभा को यथावत बनाये रखा–

विपत्रलेखा निरलक्तकाधरा निरंजनाक्षिरपि बिभ्रतीः श्रियम्।
निरीक्ष्य रामा बुबुधे नभश्चरैरलङ्कृतं त,पुषैव मण्डनम्।। 16.
निरञ्जने साचिविलोकितं दृशावयाावकं वेपथुरोष्ठपल्लवम्।
नतभ्रुवो मण्डयति सम विग्रहे बलिक्रिया चातिलकं तदास्पदम्।। 17.

भय कम्पित अप्सराओं को देखकर उनकी सखियों तथा गन्धर्वों के आनन्दित होने की कवि ने अत्यन्त सुन्दर चित्र प्रस्तुत किया है– जलविहार करमी हुयी सुरांगनाओं की जंघाओं का जब जल के भीतर तैरती हुयी मछलियों से स्पर्श हो जाता है तो वे डरकर और चकपका कर देखने लगती थी, और अपने कर किसलयों को झकझोरने लग जाती थी। यह दृश्य उनकी सखियों के लिये भी मनोरम हो जाता था, उनके प्रेमियों के विषय में तो कहना ही क्या ? परिस्फुरन्मीनविघट्टितोरवः सुरांगनास्त्रासविलोलदृष्टयः।

उपाययुः कम्पितपाणिपल्लवाः सखीजनस्यापि विलोकनीयताम्।। 18.

सन्ध्या वर्णन– संन्ध्या वर्णन के अन्तर्गत महाकवि भारवि ने सूर्यास्त, अन्धकार, रात्रि, तारें, चन्द्रोदय, चन्द्रिका, तथा चन्द्रमा आदि का वर्णन किया है। सन्ध्या वर्णन के प्रसंग में अस्त होने पर सूर्य कहॉ चला गया, इस पर कवि सन्देह करता है–सूर्य अपने अत्यन्त पिंगल करों से अस्ताचल के शिखरों के वृक्षों का सहारा लेकर उस पहाड़ के घने जंगल में प्रविष्ट हो गया अथवा पृथ्वी में घुस गया अथवा समुद्र में घुस गया क्या?

अग्रसानुषु नितान्तपिशङ्गैर्भूरुहानमृदुकरैरवलम्ब्य।
अस्तशैलगहनं नु विवस्वानाविवेश जलधिं नु महीं नु।। 19.

चन्द्रोदय होने पर अन्धकार किस प्रकार भगाया गया, इस पर कवि की सुन्दर कल्पना है–
शुभ्रकान्तिधारी चन्द्रदेव ने काले मेघ के सदृश अन्तरिक्ष व्यापी अन्धकार को दूर भगा दिया। उस समय का वह दृश्य ऐसा मालूम पड़ता है कि मानों भगवान शंकर का मृगचर्म ताण्डव नृत्य के पश्चात दूर फेक दिया गया हो।

द्यां निरुन्धदतिनीलघनाभं ध्वान्तमुद्यतकरेण पुरस्तात्।
क्षिप्यमाणमसितेतरभासा शंभुनेवकरिचर्म चकासे।। 20.

पान गोष्ठी **वर्णन–** किरातार्जुनीय में पान गोष्ठी का सुन्दर वर्णन प्राप्त होता है। अप्सराओं के मद्यपान का आनन्द किस प्रकार क्रमशः बढ़ता गया इसका रोचक ढंग से वर्णन किया गया है। मद्य का पहले स्वयं पान किया गया, फिर वह प्रियतमों के द्वारा आदरपूर्वक दिया गया। अनन्तर एक ही पात्र में उनके साथ पान किया गया। मद्य का अप्सराओं द्वारा जितनी बार आस्वादन किया गया, प्रत्येक बार उन्हे एक नवीन स्वाद का अनुभव हुआ–

स्वादितः स्वयमथैधितमानं लम्भितः प्रियतमैः सह पीतः।
आसवः प्रतिपदं प्रमदानां नैकरूपरसतामिव भेजे।। 21.

यद्यपि सुरांगनाओं ने अनेक बार मद्यपान किया, तो भी उन्होने बहुत अधिक मद्यपान नही किया। इस पर कवि की अत्यन्त सरस एवं भावपूर्ण उक्ति है– अपने–अपने वल्लभों के विषय में सशंकित सुरवधुओं ने यह समझकर कि मद के कारण हम लोगों की बुद्धि जड़ हो गयी है और यह सोचकर कि हम लोगो का त्याग करके कही हमारे प्रिय रमणार्थ अन्यत्र न चले जाये, मद्यास्वादन की अभिलाषा नही की, क्योकि जो शंका के आस्पद नही है वहॉ भी प्रेम को शंका दिखलायी पड़ती है–

मा गमन्मदविमूढधियो नः प्रोज्झ्यःरन्तुमिति शङ्कितनाथाः।
योषितो न मदिरा भृश्मीषुः प्रेम पश्यति भयान्यपदेऽपि।। 22.

ऋतु वर्णन– किरातार्जुनीय में ऋतुवर्णन दो पृथक–पृथक स्थलों पर प्राप्त होता है। चतुर्थ सर्ग में केवल शरद का एवं दशम् सर्ग में षड् ऋतुओं का वर्णन प्राप्त होता है।अर्जुन शरद ऋतु की शोभा को देखका अत्यन्त प्रसन्न हुए। शरद ऋतु में सरोवर की शोभा का सुन्दर वर्णन प्राप्त होता है– कही–कही सरोवरों के जल जिनमें विकसित कमल सुशोभित हो रहे थे, फेन और कमल पराग से आच्छादित थे, जिन्हे देखकर अर्जुन को पृथ्वी पर खिले हुए कमल का भ्रम हो रहा था, किन्तु ऊपर की ओर उल्लुण्ठन करते हुए पाठीन से अभिताणित होकर पुष्प पराग और फेन राशि के हट जाने स`जल दिखलायी पड़ने लगता था, जिससे अर्जुन का भ्रम दूर हो गया–

नुनोद तस्य स्थलपद्मिनीगतं वितर्कमाविष्कृतफेनसन्तति।
अवाप्तकिञ्जल्कवि भेदमुच्चकैर्विवृत्तपाठीनपराहतं पयः।। 23.

दशम् सर्ग में षड ऋतुओं के वर्णन को अति कौशल से उपन्यस्त किया गया है। अप्सराओं के इन्द्रकील पर्वत पर आने का प्रमुख उद्देश्य अर्जुन को आकर्षित करना तथा तथा उनके तप में विघ्न उपस्थित करना है। दनके उद्देश्य की सिद्धि के लिए अनुकूल वातावरण अपेक्षित है । वर्ष और शरद की ऋतु सन्धि को प्रस्तुत करते हुए कवि ने शरद की वधू एवं वर्षा की वर रूप में कल्पना की है मृणाल तन्तु रूप कङ्कण को तथा कुमुदनी के वनरूप वस्त्र को धारण करती हुयी शरद रूपी वधू के कोमल करकमलों का ग्रहण वर्षा रूप वर ने किया–

धृतबिशवलयावलिर्वहन्ती कुमुदवनैकदुकूलमात्तबाणा।
शरदमलतले सरोजपाणौ घनसमयेन वधूरिवाललम्बे।। 24.

हेमन्त के प्रादूर्भूत हाने पर प्रियङ्गुवन के प्रसून विकसित हो उठे। प्रफुल्लित कुन्द के गन्ध से पवन सुशोभित हो रहा। लवली लता के पुष्प तथा लोध्र पुष्प भी वायु को सुरभित करने में सहायक हुए–

निचयिनी लवलीलताविकासे जनयति लोध्रसमीरणे च हर्षम्।
विकृतिमुपययौ न पाण्डुसूनुश्चलति नयान्न जिगीषतां हि चेतः।। 25.

बसन्त ऋतु में भ्रमर ने कॉपती हुयीशाल लता के पुष्प रूप मुख का, जिसमें मकरन्द –मद्य की गन्ध व्यक्त हो रही थी, चुम्बन किया । पवन रूप निश्वास से अधरानुकारी पल्लव हिल रहे थे। वह पुष्प मानों मानिनी के मुख का अनुकरण कर रहा था–

श्वसनचलितपल्लवाधरोष्ठे नवनिहितेर्ष्यमिवाव धूनयन्ती।
मधुसुरभिणि ष्टपदेन पुष्पे मुख इव शाललताव धूश्चुचुम्बे।। 26.

उपरोक्त विवरणों के आधार पर यह का जा सकता है कि महाकवि भारवि ने वस्तु वर्णनों के माध्यम से न केवल कथावस्तु को रोचक बनाया अपितु अपने पाण्डित्य और विद्वता का अदभुत परिचय दिया, ये जब किसी वस्तु का वर्णन करते है तो अपने कल्पना शक्ति, सहृदयता, व वर्णन चातुरी से उसको अत्यन्त सरस रूप प्रदान करते है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची–

1. काव्यालंकार 1/20
2. काव्यादर्श 1/ 16–17
3. साहित्यदर्पण 6/322–324
4. किराता0 2/55–56
5. किराता0 03/5
6. किराता0 05/10
7. किराता0 06/07
8. किराता0 05/38
9. किराता0 06/47
10. किराता0 7/22
11. किराता0 7/30
12. किराता0 8/13
13. किराता0 8/14
14. किराता0 8/26
15. किराता0 8/33
16. किराता0 8/40
17. किराता0 8/52
18. किराता0 8/45
19. किराता0 9/07
20. किराता0 9/20
21. किराता0 9/55
22. किराता0 9/70
23. किराता0 4/05
24. किराता0 10/24
25. किराता0 10/29
26. किराता0 10/34